



e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2320-6710

IJRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 9, Issue 9, September 2020

ISSN INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 7.512

9940 572 462

6381 907 438

ijirset@gmail.com

www.ijirset.com

इक्कीसवीं सदी में भारतीय सुरक्षा के लिए खतरे

डॉ रणजीत सिंह

एसोशिएट प्रोफेसर - रक्षा एवं स्त्रातेजिक विभाग, समता पी. जी. कॉलेज, गाजीपुर (उत्तर प्रदेश)

सारांश

21वीं सदी का अंतर्राष्ट्रीय परिवेश पिछली सदी से अलग कैसे है? (यह पर्याप्त अलग है कि लोग अब हमारी वर्तमान स्थिति की अनुरूपता का पता लगाने के लिए 1914 तक वापस चले जाते हैं।)

2008 के बाद से, हम जिस शीत युद्ध के बाद की दुनिया के अभ्यस्त थे, वह पिछले दो दशकों से कुछ ऐसे भिन्न रूप में परिवर्तित हो रहा है जैसे कि वे दो दशक, शीत युद्ध के चार दशकों से हों। दोहरे शीत युद्ध की दुनिया के बाद हम वैश्वीकरण और एक खुले अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के दो दशकों में चले गए जिसे एकध्रुवीय क्षण के रूप में वर्णित किया गया है। यह 2008 की वैश्विक आर्थिक संकट के साथ समाप्त हो गया। और अब अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की एक मौलिक पुनर्व्यवस्था जारी प्रतीत होती है।

हैरत की बात है कि इस समय परिवर्तन का आवेग भारत, चीन और दूसरे जैसे फिर से उभरते हुए या बढ़ती शक्तियों से नहीं आ रहा है जो भूमंडलीकरण और एक खुली अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के दशक के सबसे बड़े लाभार्थी रहे हैं। खेल के नियमों को बदलने के लिए आवेग असामान्य रूप से स्थापित सत्ता धारकों से आ रही है जिनका मानना है कि वह प्रणाली और संस्थाएं जिनको उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद बनाया और चलाया था अब उनके हितों की पूर्ति नहीं करता है। एक टीपीपी और टीआईपीपी गठित करने के लिए वार्ता; समान विचारधारा वाले देशों के बीच समझौता किए गए बहुपक्षीय करारों के माध्यम से उच्च और भिन्न अंतर्राष्ट्रीय मानक और नियम बनाने के प्रयास हैं।

राजनीतिक अर्थव्यवस्था के संदर्भ में यह एक ऐसी दुनिया है, जैसा कि गांधीजी ने एक बार कहा था, जहां हर किसी की जरूरत के लिए पर्याप्त है किन्तु उनके लालच के लिए नहीं। आज विज्ञान और प्रौद्योगिकी हमें मानव जाति के भोजन, ऊर्जा, और स्वास्थ्य आवश्यकताओं के लिए समाधान पेश करते हैं। अक्षय ऊर्जा (विशेष रूप से परमाणु, सौर और पवन) में प्रगति और शीसू तेल और प्राकृतिक गैस क्रांति ने आपूर्ति समाप्त होने की रोम जैसी भविष्यवाणियों को अप्रासंगिक क्लब बना दिया है। ऊर्जा की भूराजनीति मौलिक रूप से बदल गई है। वैसे ही, आणविक जीव विज्ञान, आनुवंशिकी और जैव रसायन; उपचार और उपायों के मामले में चिकित्सा विज्ञान में एक क्रांति लाए हैं। लेकिन इस बात का कोई संकेत नहीं है कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रणाली या मौजूदा आईपीआर व्यवस्था व्यवहार में मानव जाति के लिए इन प्रगतियों को व्यापक रूप से उपलब्ध कराएगा।

एक और स्पष्ट तरीका है जिससे वर्तमान स्थिति अलग है, वह अंतर्राष्ट्रीय मंच पर राष्ट्र और गैर राष्ट्र अभिनेताओं की बहुलता है, संकुचित द्विध्रुवी राष्ट्र प्रणाली के विपरीत जिसे द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शीत युद्ध के अंत तक दो महाशक्तियों ने बनाया और बनाए रखा। यह कोई ऐसी स्थिति नहीं है कि विश्व बहुध्रुवता की ओर प्रवृत्त है या अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में कई और राष्ट्रों के पास शक्ति और प्रभुत्व आ गया है। आज विश्व के सकल घरेलू उत्पाद का 50 प्रतिशत मूल औद्योगिक ताकतों के बाहर से आता है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) ने कुछ मामलों में गैर राष्ट्र अभिनेताओं और समूहों को राष्ट्रों के बराबर शक्तिशाली बना दिया है जिससे अच्छाई और बुराई दोनों सशक्त हुए हैं। साइबर स्पेस जैसे विवाद के नए क्षेत्र हैं। और कई क्षेत्रों में खेल के नियमों में मौलिक परिवर्तन चल रहे हैं - सैन्य प्रौद्योगिकी, आतंकवाद का भूमंडलीकरण, इत्यादि।

प्रौद्योगिकी ने साइबर स्पेस के रूप में विवाद का नया क्षेत्र पैदा कर दिया है। और जिसे हम महासागरों, बाह्य अंतरिक्ष, साइबर स्पेस और यहां तक कि कुछ मामलों में वायु आकाश में वैश्विक रूप से सार्वजनिक मानते थे, अब उन पर विवाद चलते हैं। साइबर स्पेस और बाह्य अंतरिक्ष पर अब सैन्य विवाद दिखाई देता है और जासूसी और पारंपरिक तथा उप परंपरागत दोनों संघर्षों के लिए उसका प्रयोग किया जाता है। प्रौद्योगिकी इनमें और अन्य क्षेत्रों में त्वरित परिवर्तन का चालक है जो हर राष्ट्र की सुरक्षा गणना को प्रभावित करता है।

इसमें सैन्य मामलों और आतंकवाद के वैश्वीकरण (लीबिया और सीरिया में स्पष्ट) की हाल की क्रांतियों को जोड़ दें, और मैं समझता हूँ यह स्पष्ट है कि सामरिक परिदृश्य तेजी से मौलिक रूप से बदल रहा है।

परिचय

21वीं सदी में जो अब तक बदला हुआ प्रतीत नहीं होता है वह शक्ति का राजनीतिक उपयोग और लक्ष्य हैं। मुझे लगता है कि मानव स्वभाव नहीं बदला है और राजनीति, सुरक्षा और विदेश नीति को अभी 21वीं सदी की दुनिया द्वारा मुक्त की गई संभावनाओं को हथियाना बाकी है।

कोई कुछ भी कहे यह राजनीतिक रूप से अधिक विवादास्पद और अनिश्चित विश्व है। भारत के चारों ओर देखें। हमारे विस्तारित पड़ोस में पश्चिम एशिया में अशांति जारी है जिसने लीबिया, ट्यूनीशिया, मिस्र, सीरिया, इराक को प्रभावित किया है और मध्य अफ्रीका तक फैल गया है। अफगानिस्तान इस वर्ष कई बदलावों से गुजर रहा है।[1]

भारत का पूर्वी एशिया भीड़ भरा भू-राजनीतिक स्थल है जहां मौजूदा और बढ़ती हुई शक्तियां एक दूसरे से मूठभेड़ करते रहते हैं। आर्थिक शक्ति के तेज संचय से एशिया प्रशांत में राजनीतिक और सैन्य शक्ति के संचय और पुनर्वितरण द्वारा तेजी से अनुक्रमण किया जा रहा है। उभरता हुआ चीन और इससे चीन की परिधि में उभरती हुई और स्थापित शक्तियों के बीच पैदा होने वाली प्रतिक्रियाएं स्पष्ट वास्तविकता है। पूर्व एशियाई सामंजस्य अब प्रत्यक्ष नहीं रह गया है, और इस क्षेत्र के तीव्र आर्थिक विकास ने इसे एक प्रमुख हथियार निर्माण का समर्थन करने का साधन दिया है। पिछले तीन दशकों की अमेरिका प्रायोजित एशिया प्रशांत सुरक्षा व्यवस्था बदल रही है लेकिन इसे अभी तक किसी और व्यवस्था द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया गया है।

ये प्रवृत्तियां भारतीय उप महाद्वीप को भी प्रभावित करती हैं, जो आखिरकार, एशिया का ही एक उप क्षेत्र है। उप महाद्वीप के देशों की राजनीति में आंतरिक और बाहरी महान शक्तियों की भागीदारी कोई नई घटना नहीं है। जिस तरह दक्षिण एशिया का विश्व के अन्य भागों से तेजी से बढ़ना जारी है और पिछले दशक में तेजी से विश्व अर्थव्यवस्था में एकीकृत हो गया है, उप महाद्वीप में बाहरी दुनिया का दांव बढ़ गया है। भारत में हमारे लिए महत्वपूर्ण है कि हमारे पश्चिम में पाकिस्तान और अफगानिस्तान में आतंकवाद और कट्टरपंथी धार्मिक अतिवादियों के खिलाफ लड़ाई पर जीत प्राप्त की जाए और इसे हमारे पूर्व में बांग्लादेश और म्यांमार में फैलने से रोका जाए

पश्चिम एशिया में उथलपुथल, परिवर्तित अमेरिका ईरान संबंधों के आभास और वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति और मांग के स्वरूप और भूगोल में तबदीली पर भी विचार करें। इसीलिए मुझे लगता है कि हम वास्तव में राजनीतिक रूप से भी "टिके क्षण" में हो सकते हैं।

विचार – विमर्श

हमें रोज यह याद दिलाया जाता है कि हमें बहुत अधिक अनिश्चितता और जोखिम के समय का सामना करना है। बेशक ये परिवर्तन एक ऐसे समय में हमारी सुरक्षा गणना को मुश्किल बना देते हैं जब भारत मुगलों के बाद से किसी भी समय विश्व से अधिक जुड़ा हुआ है। हम सभी उन खतरों से अवगत हैं जो ये परिवर्तनों लाते हैं – पुराने और नए संवेदनशील जगह और विवादों का बढ़ना, साइबर खतरे और अधिक देशों को अस्थिर कर देने वाले अधिक उग्र रूपों में आतंकवाद तथा अतिवाद, इत्यादि।

उन अवसरों पर बहुत कम टिप्पणी की गई है जो परिवर्तन लाता है। परिवर्तन का एक दौर, जब नियम फिर से लिखे जा रहे हैं, जरूरी नहीं है कि वह ऐसा हो जिसके बारे में भारत में हमें परेशान होना चाहिए। आखिरकार हम वर्तमान विश्व व्यवस्था को आदर्श नहीं मानते हैं और लंबे अरसे से वास्तविक परिवर्तन के लिए तर्क दे रहे हैं कि अंतर्राष्ट्रीय निर्णय कैसे लिया जाए। परिवर्तन में, अपने लक्ष्यों के बारे में स्पष्ट और अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में परिवर्तन की प्रकृति समझने वाले लोगों के लिए सक्रिय और त्वरित अवसर है।

हमारे अवसरों में से कुछ अवसर उन तरीकों से उत्पन्न हुए जिस तरह भारत पिछले दशक में परिवर्तित हुआ है।[2]

उदाहरण के लिए, पचासवें दशक के बाद के हिस्से से पहली बार दस वर्षों में हम आंतरिक रूप से अपनी बिजली की मांग को वास्तव में पूरा करने के लिए भारत में औद्योगिक क्षमता बनाने में कामयाब रहे हैं। तथापि, हम उस क्षमता के संभरण के लिए हाइड्रोकार्बन और जीवाश्म ईंधन के लिए बाहर की दुनिया पर निर्भर हैं। विश्व की ऊर्जा आपूर्ति में परिवर्तन के कारण, विशेष रूप से प्राकृतिक गैस और शीस्ट तेल तथा गैस के क्षेत्र में, हम आज अनुकूल शर्तों और सुरक्षित अभिगम पर लंबी अवधि की आपूर्ति व्यवस्था में बंध सकते हैं। अब, जब संपूर्ण वैश्विक ऊर्जा बाजार बदल रहा है तो यह समय जोखिम उठाते हुए आगे बढ़ने का है। यदि हम इस अवसर को खो देते हैं तो ऊर्जा की कमी सबसे बड़ा खतरा बन सकता है या भारत को बदलने की हमारी क्षमता को सीमित कर सकता है।

इसी तरह, हम विश्व में खाद्यान्न के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक हैं और चावल और कुछ अन्य कृषि जिनसे के महत्वपूर्ण लेकिन छिटपुट निर्यातक बन गए हैं। यह पिछले कुछ वर्षों में हमारी आंतरिक नीतियों और किसानों के पारिश्रमिक में वृद्धि तथा कृषि आय

और उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि का परिणाम है। अब वैश्विक स्तर पर खाद्य सुरक्षा के जोखिम को कम करने के लिए अन्य वैश्विक उत्पादकों और उपभोक्ताओं के साथ काम करने का समय है, भले ही इसमें विश्व व्यापार संगठन में कृषि वार्ता पर हमारी स्थिति का पूर्ण पुनर्गठन तथा वस्तुओं और देश समूहों में नए गठबंधन का निर्माण शामिल हों।

अन्य अवसर हमारे अतीत की नीतियों और सत्ता का संतुलन एशिया प्रशांत में स्थानांतरित होने के परिणामस्वरूप हैं।

जिस तरह विश्व के गुरुत्व का आर्थिक केंद्र एशिया प्रशांत में बदल गया है उसे देखते हुए हमारी पूर्व की ओर देखो नीति के कारण आसियान और पूर्व एशिया के साथ अपने सहयोग को बढ़ाने के लिए हम अच्छी तरह से अवस्थित हैं। चीन पहले से ही वस्तुओं में हमारा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है। हमने संपूर्ण रूप से पूरे आसियान के साथ और आसियान के सदस्यों, जापान, और दक्षिण कोरिया के साथ मुक्त व्यापार व्यवस्था की शुरुआत की है। अब हम पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन के अन्य सदस्यों के साथ आरईसीपी पर बातचीत कर रहे हैं जिससे हमें उम्मीद है कि क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण में वृद्धि होगी।

हमें समुद्री एशिया - समुद्री सुरक्षा के मामले में हिंद महासागर के आसपास या रणनीतिक साझेदारी के संदर्भ में दक्षिण पूर्व एशिया और सूदूर पूर्व में हमारे राजनीतिक और सैन्य आउटरीच के लिए जिस प्रकार की प्रतिक्रियाएं मिली हैं – वे पिछले साठ वर्षों में किसी भी समय मिली प्रतिक्रियाओं से अधिक सकारात्मक हैं। पिछले वर्ष हमने श्रीलंका और मालदीव के साथ समुद्री सुरक्षा व्यवस्था को अंतिम रूप दिया है जिसे जल्द ही उन तक विस्तार करने की उम्मीद है जिनहोंने सेशेल्स और मॉरीशस की तरह रूचि व्यक्त की है। हमने पिछले दस वर्षों में चीन, जापान, वियतनाम, अमेरिका, म्यांमार, सिंगापुर और संपूर्ण रूप में पूरे आसियान के साथ अपने संबंधों में पहले के किसी भी दशक की तुलना में और अधिक ठोस प्रगति की है। भारत के लिए हमारे विस्तारित पड़ोस में सुरक्षा का वास्तविक प्रदाता बनने मांग है। यह एक अवसर है।

एशिया प्रशांत क्षेत्र को स्पष्ट रूप से बहुपक्षीय परामर्श और कार्रवाई की प्रक्रियाओं और संस्थानों में सुधार, मजबूत बनाने और उसका उपयोग करने की जरूरत है। कानून के शासन की एक आम समझ पर आधारित एक खुले, समावेशी सुरक्षा अभिविन्यास के निर्माण की प्रक्रिया स्थापना की अपनी प्रारंभिक अवस्था में है तथा इसे और तेज किया जाना चाहिए। पिछले चालीस वर्षों में एशिया प्रशांत देशों ने प्रमुख विवादों और मतभेदों के बावजूद संघर्ष के प्रबंधन की परिपक्वता और क्षमता दिखाई है लेकिन अब यह प्रत्यक्ष रूप से तनाव में है।[3]

हाल के वर्षों में विश्व के अन्य भागों की तुलना में लगातार तेजी से बढ़ने वाले भारतीय उप महाद्वीप में, आज हमारे पास आर्थिक एकीकरण के अवसरों का बहुत व्यापक बोध है और इसके लिए राजनीतिक प्रतिरोध बहुत कम है। और हासिल करने के लिए कुछ अवसर हैं।

भारत विवाद के नए क्षेत्र में नई स्थिति का लाभ लेने तथा साइबर स्पेस में जोखिमों और अवसरों का दोहन करने के लिए अच्छी तरह से अवस्थित है। आईसीटी क्रांति हमारी ताकत की भूमिका निभाता है। हमारे पास मानव प्रतिभा है और छोटे समूहों और विसमूहित ढंग से अच्छी तरह कार्य करते हैं जिसकी इन क्षेत्रों को आवश्यकता है। जिस प्रकार सैन्य मामलों में क्रांतियां और परिस्थितियां हमें केंद्रित और छोटे समूह आतंकवाद रोधी और विद्रोह रोधी तथा सीमित राजनीतिक उद्देश्यों के लिए बल के लघु त्वरित प्रयोग को वास्तविक रूप देने के लिए बड़े पैमाने पर औद्योगिक संघर्ष के युग से दूर ले जाता है, भारत में हमें पिछले साठ वर्षों से जो पाठ सीखना है वह उसके लिए काफी प्रासंगिक है।

मेरे विचार से समय का प्रवाह भारत को पुरानी समस्याओं के लिए नए तरीकों का प्रयास करने का मौका प्रदान करता है और नए विकल्पों को खोलता है। यदि उसे नहीं लिया गया तो वे अवसर जोखिम बन जाते हैं। परिवर्तन एक खतरा होता यदि हम एक यथास्थिति शक्ति रहते। लेकिन हम भारत में बदलाव चाहते हैं, और इसलिए हमें यह देखना चाहिए कि हमारे आसपास की दुनिया में गंभीर परिवर्तन भारत के रूपांतर को कैसे सक्षम कर सकते हैं।

परिणाम

20वीं सदी में एमबीटी टैंक, फाइटर एयरक्राफ्ट और बड़ी सतह के लड़ाकू प्लेटफार्म युद्ध मैदान का मुख्य आधार हुआ करते थे। अब नए डोमेन में उभरती रणभूमि की चुनौतियों के सामने इनका महत्व कम होता जा रहा है। इस वजह से 21वीं सदी में युद्धक्षेत्र पूरी तरह बदला हुआ नजर आएगा। इस समय सेना के सामने सबसे बड़ी चुनौती सीमित बजट में अपनी युद्धक क्षमता बढ़ाने की है।

उत्तर-पश्चिमी सीरिया और फिर अर्मेनिया-अजरबैजान का उदाहरण कि इन युद्धों में हमने देखा है कि कैसे ड्रोन के आक्रामक इस्तेमाल ने पारंपरिक युद्ध पद्धतियों को चुनौती दी है। इन युद्धों में टैंक, तोपखाने और पैदल सेना से ज्यादा इस्तेमाल आधुनिक तकनीक का हुआ है। हमने यह भी देखा है कि प्रौद्योगिकी स्वयं एक प्रमुख मुकाबला क्षमता के रूप में उभर रही है। यह अनुमान

लगाने के लिए काफी है कि विघटनकारी प्रौद्योगिकियां अब सिद्धांत चक्रों को चला रही हैं, जो पहले कभी नहीं था। जनरल नरवणे ने कहा कि मुकाबला अब सिर्फ दो पारंपरिक डोमेन तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि साइबर, स्पेस, इलेक्ट्रोमैग्नेटिक स्पेक्ट्रम एंड डिजिटल स्पेस के नए डोमेन का लगातार विस्तार हो रहा है।[4]

निष्कर्ष

भारत इन अवसरों को ग्रहण करता है अथवा नहीं, यह हम पर निर्भर है। यह हमें निरंकुश शासन के व्यर्थ खोज में वापस भयभीत करने के लिए जोखिमों और खतरों की पारंपरिक सूचीबद्धता लाने के लिए सुविधाजनक होगा। गठबंधन का चुनाव करना, जिम्मेदारी से भागना हमारे अपने भाग्य के लिए सुस्त होगा। उससे शायद ही खतरों का हल मिलेगा या खतरा समाप्त होगा। यदि हमें दिखने वाले परिवर्तनों के अवसर और प्रकृति में से कुछ भी यह सुझाव देता है कि जवाब विश्व के साथ अधिक बहु दिशात्मक कार्य है उससे कम नहीं, तो निश्चित रूप से यह मेरा विकल्प होगा।

हम कैसे प्रतिक्रिया करते हैं यह उस भूमिका से निर्धारित किया जाएगा जो हम विश्व में चाहते हैं। पिछले कुछ वर्षों में काफी अनर्गल बात बात चल रही थी कि भारत एक महाशक्ति बनेगा या नहीं। मैं इस बात से निश्चित नहीं हूँ कि उसका क्या मतलब है और वास्तव में यह एक वांछनीय लक्ष्य है या नहीं। हमने कभी भी मौजूदा शक्ति धारकों को बदलने की इच्छा या उनका अनुसरण नहीं किया है, और मुझे आशा है कि ऐसा कभी नहीं करेंगे। निश्चित रूप से हम अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को दुबारा बनाना चाहते हैं जिससे यह हमारे विकास के लिए और अधिक न्यायसंगत, लोकतांत्रिक और अनुकूल हो।[5]

श्रीमती इंदिरा गांधी, जो निश्चित रूप से एक यथार्थवादी थीं, एक अलग तरह की शक्ति के रूप में भारत के बारे में बात करती थीं। मुझे लगता है कि उन्होंने विकास के घरेलू कार्यों की भारी प्राथमिकता को समझ लिया था जो इतिहास हमारे लिए छोड़ गया था। उन्होंने, और दूसरों ने सुरक्षा और कूटनीति के अधिक सैन्यीकरण के खिलाफ चेतावनी दी थी और नरम शक्ति के महत्व को स्वीकार किया था। और फिर भी, जब हमें दृढ़ शक्ति की बुनियादी जरूरतों में से कुछ हासिल करना बाकी था, तब भी उनको इस तथ्य पर कोई संदेह नहीं था कि भारत प्रमुख शक्ति था, है और रहेगा। लेकिन एक शक्ति, जिसके प्रभाव को निरस्त्रीकरण, राजनैतिक स्वतंत्रता और आर्थिक विकास जैसे कारणों के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में बहुपक्षीय या यहां तक कि व्यक्तिगत रूप से भी अन्य देशों के साथ इस्तेमाल किया गया। आज, चूंकि हम बदल गए हैं और शक्ति की कुछ विशेषताओं को प्राप्त करना शुरू कर दिया है, हमारी घरेलू प्राथमिकताएं और अनिवार्यताएं सर्वोपरि हैं। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में अन्य देशों के साथ काम करना हमारा सबसे अच्छा मार्ग भी बना हुआ है जो शांतिपूर्वक अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को दुबारा बनाने के लिए हमारे हितों और मूल्यों को सांझा करते हैं, ताकि भारत सुरक्षित और समृद्ध हो सके।[6]

संदर्भ

- 1) विकियात्रा पर भारत के लिए यात्रा गाइड 2011
- 2) भारत का राष्ट्रीय पोर्टल (हिन्दी में) 2010
- 3) भारत २०११ (प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित भारत के बारे में सम्पूर्ण जानकारी) 2008
- 4) India at UCB Libraries Gov Pubs 2009
- 5) बीबीसी हिन्दी पर भारत 2011
- 6) india gk question answer in hindi pdf 2012



INNO  **SPACE**
SJIF Scientific Journal Impact Factor

**Impact Factor:
7.512**

ISSN INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA



INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

 **9940 572 462**  **6381 907 438**  **ijirset@gmail.com**



www.ijirset.com

Scan to save the contact details